

आशा सरवार्थ

९९५

ASMA ARCHIVES

ऊविनावायवीकृदिकायेनदहरेनवाययादूकां॥**ॐ** हं सं त्रं वं य व र्जं जानो न का
मुकडावायेनामूमुयेकालनाणीद्वियिनि कायेकोवर्थेकृदिकायेडादहरेन
वाययादूकां॥**ॐ** हं सं हं भव र्जं यादूदवीकाट नृकायेमहातन्नाशमूनी
ष्टं विनीकाष्टिकमयेकृदिकायेनृ४ दहरेनवाययादूकां॥ ८॥ नृमि नृदहरेन
वाष्टकं॥ ॥**ॐ** हं नृकृसायेयादूकां॥ कृसायेयादूकां॥**ॐ** हं नीवायेयादूकां॥**ॐ** हं
मिशायेयादूकां॥**ॐ** हं कृकृनायेयादूकां॥**ॐ** हं नृकायेयादूकां॥**ॐ** हं नृनायेयादू

कां॥**ॐ** हं क्रियायेयादूकां॥**ॐ** हं कृदिकायेयादूकां॥ श्रीश्रात्मनस्तनयविश्वकनया
दूकां॥ ॥मखसा॥**ॐ** ८१ यन्त्रि५ वं क्रि५॥ मन्त्र॥**ॐ** हं मूं यवद्वीयवाल्मी
दवीमहादंष्टकृगयाल (श्रीं) श्रीकृनय (ग) श्रीडाडियानमयू हामूदाया (१०) श्री
डाडीमनाथदवश्रीनकासादवी श्रीश्राधारीमानन्ददवश्रीकृकानिमहका नि
वृद्धश्रीकदम्बवृद्धश्रीउदयगिरियद्वीगश्रीवदूकनाथकृगयालयिशुश्रीकृदि
कानन्दयादूकां॥**ॐ** हं मूं वलुद्वीयलीमवाम्बादवी श्रीसूगन्धिकृगयाल (श्रीं) श्री

उनायू (ग) श्रीजाला नव श्रीमहा मल्लु लयी (०) श्रीजाला म्वाद वी श्रीजाली मनाथ
दव श्रीक नाला म्वाद वी श्रीक नंगी सानन्द दव श्रीक काविम रुक्मा विवद हि
मगि विवद न श्रीयम दलु कृ याल यद श्रीक डि कानन्द दव यादू कां ॥ वं ऊ
मूं ऊन दीय कलनी दवी श्री (ग) याल कृ याल नों श्री दायन यू (ग) श्री यू लु मि
विमहा मल्लु लयी (०) श्री यू लु म्वाद वी श्री यू लु मनाथ दव श्री वलु का म्वाद
वी श्री वकी सानन्द दव श्रीक काविम रुक्मा विवद श्री विक्कि विवद नून ल

गि विवद न श्री विमल कृ याल नू य श्रीक डि कानन्द दव यादू कां ॥ वं ऊ मूं न
न दीय धर्मा दवी श्री महा काय कृ याल यू श्री कलियू (ग) श्री काम नू यन द
ययी श्री काम विऊ या म्वाद वी श्री कामी मनाथ दव श्री महा कृ म्वाद वी श्री मर्द
टी मनान्द दव श्रीक काविम रुक्मा विवद श्री वल वल वल साम गि विवद न श्री
वक दलु कृ याल नू या नीन श्रीक डि कानन्द दव यादू कां ॥ वं ऊ मूं महा नल
दीय धर्मा दवी श्री महा काय कृ याल यू श्री नू वनायू (ग) श्री यनायू यन वल

यी० श्रीचन्द्रिन्नाम्नादवी श्रीचन्द्रोभनाथदव श्रीमनक्षिन्नाम्नादवी श्रीमनक्षीसा
नन्ददव श्रीकृष्णामिम्नादवी श्रीचन्द्रोभनाथदव श्रीमनक्षिन्नाम्नादवी श्रीमनक्षीसा
श्रीविजयनाथदव श्रीचन्द्रोभनाथदव श्रीमनक्षिन्नाम्नादवी श्रीमनक्षीसा
का॥ नृ० श्रीचन्द्रोभनाथदव श्रीमनक्षिन्नाम्नादवी श्रीमनक्षीसा
॥ नृ० श्रीचन्द्रोभनाथदव श्रीमनक्षिन्नाम्नादवी श्रीमनक्षीसा
॥ ४ ॥ श्रीमनक्षिन्नाम्नादवी श्रीचन्द्रोभनाथदव श्रीमनक्षिन्नाम्नादवी श्रीमनक्षीसा

वैकि० ॥ दूथलमान् ॥ मनु ॥ मालिनी ॥ नृ० नृ० नादिन्येयादूका॥ नृ० धं गसन्ने
यादूका॥ नृ० नृ० निवलेयादूका॥ नृ० नृ० यमिष्येयादूका॥ नृ० नृ० विज्ञायेयादूका॥
॥ नृ० नृ० नृ० यादूका॥ नृ० नृ० मूलुयेयादूका॥ नृ० नृ० धं धियेयदर्थन्येयादूका॥
॥ नृ० नृ० नृ० यादूका॥ नृ० नृ० मादूयेयादूका॥ नृ० नृ० यज्ञयेयादूका॥ नृ० नृ०
नृ० नृ० नृ० यादूका॥ नृ० नृ० वजि० यादूका॥ नृ० नृ० कं कयायेयादूका॥ नृ० नृ० खं कालि
निवायेयादूका॥ नृ० नृ० धं धायायेयादूका॥ नृ० नृ० धं वीवायेयादूका॥

हवाय ॥ तं गच्छी भय ॥ तं हनि काय ॥ उं सश
न सनाय ॥ नृमहा सनाय यादूका ॥ तं उं कं का
य भय ॥ यं मिवाय ॥ दं च क नू दाय ॥ चं कू म्माय ॥ कं
मूखाय ॥ यं नृऊ भय ॥ उं म म्मा भय ॥ टं सा म म्माय ॥ रं लां ग
भय ॥ उं टालू काय ॥ टं नृ ह ना नी भय ॥ उं उ मा का काय ॥ गं नृ भय ॥ थं दि
लु माय ॥ टं धा गी भय ॥ धं मी नाय ॥ नं म म्माय ॥ यं ला हि नाय ॥ हं मि री भय ॥ वं

कृ ग न लु म्माय ॥ हं द्वि न लु म्माय ॥ मं म हा का लाय ॥ यं वा सी भय ॥ तं गु ऊं भय ॥ सं यि ना
न ॥ वं श व ष्ठी भय ॥ मं व का न न्दाय ॥ यं (म) ग न न्दाय ॥ सं ह ग व ॥ हं लां कू ला
य यादूका ॥ हं मि म द्वा नी ॥ धा ॥ ग न्ना व ग न ग न्ना य वि
दि ॥ व लि ॥ नृ वा रु ना दि ॥ शि भू ल् नृ सि क्क न मू द
गुं न ग य न्कि सम ॥ दू थ ल मा न ॥ म न्ना ॥ तं उ म्मा
क न यादूका ॥ सां ह द या दि ॥ व लि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मामूलस्मरणं ॥ य विगुरुं १०८ शक्ति ऊर्व कि
॥ मन्त्र ॥ मासिनी ॥ गदनाभी ॥ कुमया ॥ ॥ विवि
का न य नार्थे यादू कां ॥ नं ऊ नू द्या न द्यौं कुं य न म द्या न
म ही ष नी व म १ नू १ नू १ नू १ रु ट् म् १ कुं १ कुं १ रु ट् वि श्या ग स्वा
यादू कां ॥ नं ऊ नू द्या न द्या धि का न द्यौं कुं १ कुं १ रु ट् नू य नार्थे
दू कां ॥ नू नि वि श्या ॥ ॥ नू थ द्या नि का ष क ॥ नं ऊ द्यौं नू १ नू द्या न द्यौं नू १

यो यो यादू कां ॥ नं ऊ द्यौं नू १ य न म द्या न द्यौं कुं १ य न म द्या यो यो यादू कां ॥ नं ऊ
नू य द्यौं कुं १ य न म द्या यो यो यादू कां ॥ नं ऊ द्यौं नू १ द्यौं द्या न म
यादू कां ॥ नं ऊ द्यौं रु ट् हा म ना मा र्थे द्यौं हा मा र्थे यादू कां
नू य नार्थे यादू कां ॥ नं ऊ द्यौं द्यौं रु १ व म द्यौं ना म वा म न्यो
मो यि व न्ये यादू कां ॥ नू नि द्या नि का ष क ॥ ॥ नू
कां ॥ नं ऊ नू द्या न द्या यादू कां ॥ नं ऊ नू वि श्या नार्थे

नाम

क्रां॥ घं॥ सुं॥ मालि नो घां॥ दू
नीं॥ नं॥ सुं॥ नासावू माये
नीं॥ नं॥ सुं॥ म





[illegible]

अथ न सच्चिदानन्दवत् नृलुङ्ग नृद्वयाक काश्च याक ॥ थ
न नववत् यद्वत् सनवायाव वाय ॥ म (अ) शिका लव हि ४ वदं ॥ ख न
नं पूर्व का लव वरु ला का न मा लिख ७ । ह व न वे व ने मृ त्या ष द्वा ल व वि
धी य न ॥ वा य यां उ ल व नं वि या शि का ल का न मा लिख ७ । ली भान (अ) थ
नं द वी नृद्व व नु नु धा न थ ७ ॥ आ य यां व नु नु स नु स च्च व नु श्च स्का य
य ७ । आ न न द य शि मे रू यं द्वि य नु स मा लिख ७ ॥ म (अ) नु स्का य य ७

या यं द कि ल नृ लु उं वि द् । या य वाम नृद्व या क या य (य कं च कं वि द्
४ ॥ च न वि धानं क र्त्तु यं नु नु य द भ यूर्व कं ॥ न द्वा क व नो भि या नि नी व ति
४ ॥ न र्मा म (अ) शि का ल या र्त्त ॥ नृ मु म नु ल या र्त्त स त् ॥ नृ द्वा न व द्
व नी भि न धू य य ॥ नृ मु म नु ल रु य व य ॥ क व च नो व नु ल न् ॥
न न न नृ मु नी क न र्त्त ॥ न क च न न न न य य ॥ या य न न न र्त्त का
न वा य ॥ च न न सि न्दू न द शि य रू य वी न न क य रू य क रू य ना का

यजुयनाका मूहवधनानासंकवलय ॥ संरुवर्थनय ॥ शुनू
अधुनं पावया गिनी यनामृगद्वयानयूनय ॥ खववा दियश्रक
यश्रवीरुमनुलसमावाया ॥ मूंमूं पूंमूं नूं ॥ पूजा ॥ उं ऊ सूर्यमलुला
यद्वा दधकला नमनम ॥ यारुं यूनय ॥ उं मूअ (धनववा रुति
॥ उं मूअयादि ॥ मनु ॥ उं ऊ वक्राणु खलु सं हन म (अषवस सं ह
वं ॥ न्नायू विनं म हा काशं यी यूषं वा र्धमानय ॥ ला का वस समा द

वा सिन्दूवा नूल (अहिना ॥ मूछा दध गुजा काक्षु सर्वो लं कानु ह वि
गा ॥ क्रीना दमृथना हू न मू लिना र्धं नमा मृन ॥ उं ऊ क्मा यारुं यूनय
१ म्दया यारुं य विरुं कू नू २ खा ला ॥ मूछा वा मु म मू नुल उं का
वं मू ॥ समालिख ॥ ॥ मूवर्णु वज्र नय द्रय या वुं कू नं या वा
नू नू ॥ वनिधाय वि का नम (अधरु वं ॥ ॥ थ द या दवनला
रु य मश्चि मश्चि या दवन कां ग थ ल ॥ थ कां ग हा ऊ न का या

व न्यासयाय ॥ अमुमनुभकां भलकन रमधनयाय शिकानवाय ॥ (थयव
वृक्षुयन साखन धलिदूदवीव दुव्य डोषधी शिवनूयश्च वनूगयाव द्वाय ॥
धनलिङ्गादुमिआगिन्यादुमिनिर्मालयाय ॥ ऊधवीवऊनानूसावमशियका
नदयकाववचनयावकंनय ॥ लिङ्गादुमियावासलं मृगुलियागनय ॥
झादूकायउनयिकाव सिमनंयू नय ॥ यागिन्यादुमिस शियकावसय
नयये ॥ अमुमयमालननकवहिकानय ॥ समयानकवाय ॥ ॥ गनोन

योगशा ॥ वीवऊनासनंयानचूर्णन लिखित्वा यश्च वलिकनूलाकलुद्वयं
स्त्रायपित्वा वीवऊनानांयूजाय यागिसङ्गादुय यागमलुयाद्वाङ्गयाद
युक्तावर्ण ॥ यदुवासनननवनकीवाय ॥ यऊमाननसूर्यार्घ्य ॥ ॐ अथ
यादि ॥ मनु ॥ त्रैलोक्यं कूलमाहूतुमहाहोत्रवायय कामकिं स हिनाय
यऊमानस्यामूक दै कामनार्थं यमिवा विंशतीमकुक्षीकृदि कादवीय
विशानाहनाह्वनागदीययागध्वनकं पुंवृहहानव ईर्धनम ॥ स्वाहाया

दूकां॥ कसिकलषकना॥ ॥ यजमाननन्यासाद्ययागयूजा॥ यागि
नायूर्वाहिमुखं स्थाया॥ नैज आध्याययययि कासनं ८॥ नैज सिंहासनायथा
दूकां॥ नैज मृगा॥ श्रीमहाविद्यायाजं यत्री दूकां॥ यादूकां॥ ३॥ वसि॥ षोषधी
सहिनन ३॥ यादार्घ्यं॥ वाक्॥ उष्माद ३॥ कनहेशर्क॥ यागिन्यागलय
वैकांयाद ३॥ यक्षासनं यक्षं यविर्गया ३॥ यनाशनं॥ ॥ अथवावाक्
विष्णोष॥ सुगन्धवन्दनेनेव वीनयादार्घ्यं मयव॥ उष्मादकनयक्षात्य

यादयूजानमस्कृता॥ नमस्कावयाय॥ ॥ अथकावल दण्डवदक गलनवा
त्मा श्रीकल माणका उग्रवल्गु शिखल्गु कम गिस्वास्वकुन्द यादार्घ्ययाचक
॥ न्नास्वमूलमनु विष्णोष सकलनां दु थं ॥ वसि विसर्क नं द्वास्मान
द्विथ ७॥ ॥ यागसत्यं गस्वास्वस्वासन समूयविष्णु॥ ॥ यजमाननयूषाण
राजनं॥ अमात्रका॥ सिद्धिनेमु क्रिया॥ शुभसमर्थनं॥ ॥ शुभलवम्या॥
ॐ नमोऽस्त्यदि॥ शुभलवम्या न्यासाद्ययागयूजात्मयूजा॥ यनउग्रवल्गुयूजा॥

मलिकस वाहनया इल दास्यं स्वप्न मूलन मल इल दास्यं उयवधुम
माल ॥ ॥ जंज आधनमकि कमलासाये यादू कां ॥ जंज मुहासाये यादू कां
॥ जंज निमुहासाये यादू कां ॥ जंज मरिषासाये यादू कां ॥ जंज सिंहासाये या
दू कां ॥ जंज मलमाय रुगव गिद वि आग रु २ नमानम ३ साहा ॥ श्रीवा रु
न ॥ मूलमनुज शुभ्र लि ॥ नूदवधु दि ८ ॥ कायायनी ॥ शुभ्र धनी ॥ सि
द्विलक्ष्मी ॥ मूलमनुज यूजय ७ ॥ वन्दन सिन्दूर मारुनी यक्षायवीन यूष्य

रुल नाम्बल ॥ षडङ्ग मावाक्यानि मूला ॥ ॥ गन १ याग समर्थ ॥ यत्र कं
ठक नवीनयादि ॥ वलि ॥ धूय दीय ॥ सिन्दूर दक्षिण मुनि ॥ सिन्दूर वन्द
न ॥ यासो रुदा ॥ यादवी कृद्वि कास्या ॥ यादवी मधुकेट हनि ॥ उद्गु लाम्बुज ॥
निर्विघ्न वायगुरु आदि मध्यावसानक ॥ अस्मत्पुष्प लाकानां गिवं ह वधुनि
त्यम् ॥ अङ्गमानस्य नि अमूक कामनार्थ यु निवायिक यविशायारुन अर्द्ध वा
यदायया गार्धन निमित्तार्थ उयवधु दयार्धन विधेय सर्व विधियनि

यूनुमम् ॥ धनमधिकं स्वप्नसुखकामलममास ॥ ॥ गनः कृदिकार्चनं ॥
नृजश्रावणमकि क मलासनाथे नृष्ययुषिकासुनं ॥ वषासाययादूकां ॥ सिं
हासाययादूकां ॥ आवाहनादिशुद्धि ॥ नृजश्रावणमकि हेयवानन्दवी
नाधियनयमदूकां ॥ श्रीमहाविद्यानाथजीया ॥ दूकां ॥ ३ ॥ नृद्यानवद्वय
गामि ॥ वन्द ॥ नादिसर्वाय हानन्दया ॥ ॥ षडङ्गमावाह ॥ विभूत
यानिमूर्धाद ॥ मय ॥ यावत्समर्थ ॥ व ॥ नि ॥ धूयदायददि ॥

ऊयसम ॥ यासोरुदा ॥ यादवीकृदिकार्या ॥ शुद्धेकासुखवर्ण ॥ गयगात्रा
नृभा ॥ निर्विघ्नवानयागनु ॥ यजमानसामिकृदिकार्चनविधिसुखवि
धियत्रियूनुमम् ॥ ॥ गनायामिनीयुजनं ॥ नृजश्रावणमकि क मलासनाथ
वयुषिकासुनं ॥ नृजसिहासाययादूकां ॥ कृदिकार्यायादूकां ॥ दवीमूला
या ॥ उक्तायाधनवकुमनसिलयगगावक्रन ॥ विद्यानाथानीलाहस
नाऊसूटिकरूटिनिरासुऊयुऊसूदार्क ॥ धायनीयननिरासुऊयुऊ

कूजासू लसू का विमूर्ति १ सादवी अनर्था (गव रु नि यू ट समा ध्या यन न व
 मर ध्या ॥ यानि मूय या यषा दूर्वा दग सं धन न व रु न्ना सा यू ट न स म वा य
~~विना विन सि धान य ७ ॥~~ आ वा रु न ४ ॥ म हा मा या वि शाना ऊ य नी द वी
 आ ग रु २ न मा न म ४ स्वा रु पा दू का ॥ ध्या न ॥ जं ऊ र का न का म न व न
 शिन शा दि व य नू यि नी ॥ ना ना न न वि वि श शी व न दा रु य या नि नी ॥ ध्या न
 यूर्ध या दू का ॥ शु ङ्ग लि ॥ जं ऊ म्दी धी म हा वि शाना ऊ य नी दू या दू का
 शु
 शु

॥ अ ध्या न व रु व ना मि श य ल सं यू क ॥ जं ऊ म्दी रु द या य न म ॥ जं ऊ म्दी
 मि न ॥ जं ऊ म्दी मि र वा ॥ जं ऊ म्दी क व य ॥ जं ऊ म्दी न य ॥ जं ऊ नू मु ॥ रु मि व
 उ ङ्ग ॥ न न र्ध य हा न द या ७ ॥ च न्द न ॥ जं ऊ धी र व रु च न्द सं यू कं त्या दि ॥
 सि न्दू व ॥ वी न य न म हा वी न त्या दि ॥ ॥ मा रु नी ॥ मा रु नं का म सं सि दि
 त्या दि ॥ ॥ य ङ्गा य वी न ॥ य ङ्गा य वी न य न मं त्या दि ॥ ॥ मा हा य षा ॥ ना ना य षा
 सू ण न्ध नि त्या दि ॥ ॥ क र्णु य ना का सि न्दू व व मु द वि ॥ ना ना व मु वि वि श

निष्ठादि॥ ॥रुत नामूल॥रुतनामूलयकान्त्यादि॥षष्ठमावाका॥
(धनूया निमहा मूदायिदम्भ॥ ॥नर४यावसमर्थ्य॥॥नृ०चवृकंशु
द्रुतवीन्यादि॥वीजसमर्थ्य॥ ॥मूदाया॥॥नृ०चवृकंशु
धर्म्यादि॥स्वागर्गधर्म्याकाजात्यादि॥ ॥यावसमर्थ्य॥॥नृ०च
लिंशुद्रमहावीन्यादि॥नृनमहावसंदिर्वाद्यादि॥ ॥वलि॥॥नृ०च
मरुमनुया॥॥नि॥॥नृ०चवृकंशु॥ ॥विनामलिसमर्थ्य॥॥धूय॥ना

नागन्धसूगन्धानि॥दीय॥सर्वदवमर्थ्यदीय॥ ॥आयमूलन॥यऊमा
नस्यानि दीययागनिमित्तार्थं सिन्दूरदक्षिणागुर्त्यमरुसंयुदद॥ ॥
मुनि॥सिन्दूरवन्दनवीनयिनपूषामालाद्यादि॥ ॥यामीहदादिहृद
४यनमयदकथवन्दु॥जेलासनम्भ्यादि॥ ॥यादवीकृदिकास्याकुमक
लसकलमलुलथलिलवाद्यादि॥ ॥धमावाका॥ ॥नमाशुवृदिकाद
वीसर्वसिद्धार्थदायिनि॥सर्वभानिकवानिर्त्यकृदिकायवमभ्यनी॥ ॥

निर्विघ्नं वा न याग मित्यादि ॥ यजमानस्य निशागिन्यश्च न विधेः स सर्वं यत्र
पूर्वमुक्तम् ॥ ॥ अथ कुरुयात्तयूजनं ॥ वैजं आधाय भक्ति कमलासन त्यादि ॥
॥ नवास्त्राय यादूकां ॥ कुरुयात्तनाय यादूकां ॥ आवाहनादिशुश्रूषि ३ ॥ वैजं
कांकां कुरु १ को कुरु १ कुरुयात्तनाय यादूकां ॥ वलिं ॥ पूर्ववच्चन्दनादि ॥ षष्ठं
६ ॥ दलुमूढा ॥ मुनि ॥ आदो कुरु समर्च ॥ अथ गन्धादि ॥ ॥ नि कुरुयात्तयू
जा ॥ ॥ नग १ वदक यूजनं ॥ वैजं आधाय दि ६ ॥ मयूनासनाय यादूकां ॥

वैजं वदकनाथसनाय यादूकां ॥ आवाहनादिशुश्रूषि ३ ॥ वैजं श्रीकाकुल
युगवदकनाथाय यादूकां ॥ वलि ॥ पूर्ववच्चन्दनादि ॥ षष्ठं ६ ॥ नकुनी
मूढा ॥ मुनि ॥ वकासं वात्तयूयं ॥ अथ गन्धादि ॥ ॥ नग १ गदाय नियुजा ॥
वैजं आधाय दि ६ ॥ मूषासनाय यादूकां ॥ रुचमासनाय यादूकां ॥ आवाहना
दिशुश्रूषि ३ ॥ वैजं गं गी गूं (गं) गं १ गूं कुरुल ग (ग) गदाय यादूकां ॥ वलिं
॥ पूर्ववच्चन्दनादि ॥ षष्ठं ६ ॥ नकु मूढा ॥ मुनि ॥ विघ्नं गं (ग) गदवर्ण ॥

नृगणम्भादि॥ ॥ नृथनवासायूजा॥ जेऊ आधावादि॥ ६॥ मवासनाययाद
 कां॥ नवासासनाययादकां॥ आवाहनादिशुश्रुलि॥ ३॥ जेऊ आधा॥ नृनन्द
 मकिरेववानन्दवीवाधियनयमदु॥ श्रीमहाविद्यावाक्य॥ श्री॥ श्रीन
 वासनशुश्रुलियुषायादकां॥ ॥ ॥ वलि॥ पूर्ववच्चन्द॥ ॥ नादि॥
 षष्ठ॥ ॥ विष्णुसयानिमूढा॥ मु॥ नि॥ उकावाधुयया॥ ॥ दा॥ नृ
 गणम्भादि॥ ॥ नृथश्रीकल्याणायूजा॥ जेऊ आधावादि॥ ६॥ दवासनाय

यादकां॥ श्रीकल्याणसनाययादकां॥ ॥ नृथमात्रकायूजा॥ जेऊ आधावादि॥ ६॥ दसासनादिसुखा
 सनं॥ आवाहनादिशुश्रुलि॥ ३॥ जेऊ आधा॥ नृनन्दमवाधवचदविमलनृश्रीवका
 लोयादकां॥ ॥ नृथादि॥ ६॥ वलि॥ पूर्ववच्चन्दनादि॥ ॥ षष्ठ॥ ॥ यथादिसु
 खमूढा॥ मु॥ नि॥ वाक्कायान्मरुतूयी॥ नृगणम्भादि॥ ॥ नृथश्रीवकायूजा॥

चंज आधनादि ८ ॥ शुभासनाये यादूकां ॥ निशुभासनाये यादूकां ॥ महिषास
नाये यादूकां ॥ सिंहसासनाये यादूकां ॥ आवाहनादि शिवाश्रुति ३ ॥ मूलमन्त्र
॥ वलिं ॥ पूर्ववच्चन्द्रनादि ॥ षडङ्ग ॥ यानिमूढा ॥ मुनि ॥ मध्यधौतयवर्ण ॥
अश्वगन्धादि ॥ ॥ अथ विश्वसूक्त ॥ चंज आधनादि ८ ॥ शुभासनाये यादूकां ॥
विश्वसूक्तसनाये यादूकां ॥ आवाहनादि शिवाश्रुति ३ ॥ चंजमूढा ॥ विश्वसूक्तद्वयोया
दूकां ॥ वलिं ॥ पूर्ववच्चन्द्रनादि ॥ षडङ्ग ॥ विश्वसूक्तमूढा ॥ ॥ मुनि ॥ वृका

ज्ञानीक्रियासा ॥ अश्वगन्धादि ॥ ॥ अथ विश्वसूक्त ॥ चंज आधनादि ८ ॥ यश्वयना
सनाये यादूकां ॥ वृषासनाये यादूकां ॥ सिंहसासनाये यादूकां ॥ आवाहनादि शिवा
श्रुति ३ ॥ चंजमूढा ॥ आनन्दगकिरेनवानन्दवीनाधियनयमूढा ॥ श्रीमहावि
द्यानाश्रयनी ॥ ॥ अथ विश्वसूक्तमूढा ॥ वृषासनाये यादूकां ॥ व ॥ लिं ॥ पूर्वव
च्चन्द्रनादि ॥ ॥ षडङ्ग ॥ धनूयानिमूढा ॥ मुनि ॥ मध्यधौतयवर्ण ॥ शुभासनाये
वृक्षादि ॥ अश्वगन्धादि ॥ ॥ अथ विश्वसूक्तमूढा ॥ चंज आधनादि ८ ॥

वृषासनाययादूकां॥ निखानाथसनाययादूकां॥ आवाहनादिध्यानं॥ यश्च
स्यं॥ अथर्ववृषाहमनूगमंदक्षिणनीलवर्णं वामवर्कं शिनर्गवनकसमवनं
पश्चिमनूर्ध्वं मुकुं॥ शैल्यं यागमभुं त्वरयकपवर्गं भक्तिं यद्वाजजायां स्वचन्द्रं
श्रीनिखार्थं निवयवमकवर्गं नोमिखेद्राक्षरुसं॥ ध्यानयूयां यादूकां॥ शुक्ल
३॥ तं॥ कुं॥ कुं॥ कुं॥ निखासुचन्द्रलेखवाययादूकां॥ वलिं॥ पूर्वोक्तविधानेन
वन्दना॥ १०॥ दिपाय विनामनि दक्षिणसर्वदशा॥ षडक्ष॥ ६॥ ॥ ध

नमूदां॥ ऊयस्मात्॥ यासोहदा॥ यादवीकृद्विधाया॥ यश्च अंयश्च वक्तुं वि
कटरुनिजटावर्द्धदूटममक्षं॥ अनाईयागहसं त्वरयववकनं सर्वसत्त्वसु
यं॥ वजासुद्राक्षमूलं उमनूऊयध्वं विन्दुयार्गं शिनर्गं काठनं भक्तिमध्वास
मलयनिवर्गं यागुव॥ कार्तिवासा॥ निविद्यमिहादि॥ नूगमन्वादि॥ ॥ अथ
यश्च वलियूजा॥ तं॥ आध्यादि॥ मयूनासनादिसुखासनं॥ आवाहनादिसुख
मनुजशुक्लि॥ वलिं॥ पूर्ववच्चन्दनादि॥ षडक्ष॥ ६॥ सुखमूदा॥ मुनि॥ दवीयू

ॐ विष्णवे नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन
कथा मल्लिकास्था ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन
ऊकानां ह्यरुनीन मम सदा र्ग सदा यत्क नापु ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
गता सुनूला ऊतन यातन ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन
ऊकानां ह्यरुनीन मम सदा र्ग सदा यत्क नापु ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन ॥ यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन ॥ यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन ॥

पूज्य ॥ ॥ गता सुनूला ऊतन यातन ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन
यित्वा श्री कृष्णाय नमः ॥ यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन ॥ यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन ॥
गता सुनूला ऊतन यातन ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन
यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन ॥ यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन ॥ यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन ॥ यादवीया गिनीवे सकल ह्यरुनीन ॥
ऊकानां ह्यरुनीन मम सदा र्ग सदा यत्क नापु ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यातवर्तुनिहंदहं वन... पुत्रुयूसुकार्दकचुयावधुना
मृगं॥ वृषलासनस्त्रिनाक्षत्रं ध्यायितुं निखिलं तथा। विक्रयद्रुचनंदवंदानि
उविष्यधानकं॥ शुश्रूणि॥ मिखा (अ) खवम (ध) र्कं कृदिकानन्द (अ) चनं। कालि
मनुजसंयुक्तं कलुलीगनभामुन॥ नें ऊद्यान नूद्यान मूद्याना मूखीव दू
नूद्याये ऊमूं मनुका (ध) १ कां कां वूं कां नूनारुगकादिनाये लुदायूना विष्ण
नन्ददवयादूकां॥ नें ऊरुनाये वूं मूं वल्लमखलाकलागगर्हणमिनी

मखलाकनूमृगसंक्षुनिगीमत्यानन्ददवमखामान्नखलककाटिसि
द्वन्नखलककाटियागिनीयादूकां॥ नें ऊकां सर्वदावना मूद्यांदर्भय७॥ व
लिं॥ ऊय... १०॥ मुनि॥ हवर्चुवनं सर्वयविर्गंदह (अ) धनं। सुखिसं
यददाल... वदक... मृग॥ हवर्चनवि (ध) र्कसर्वयविर्गुम
मु॥ १॥ ॥ ऊ... लवर्चनं॥ नें ऊकां मलियनकचकासनाययादूकां॥ नें
ऊकां मलाऊवमूखययादूकां॥ नूनारुनादि ध्यानं॥ कन... मसंकाशं

नालयं ॥ स्वाधिसूक्तकवकर्मकल्यवृद्धस्त्रिगासनं । नवमवयवयुक्तं
नधन्यश्रुतगदं ॥ श्रुति ॥ नैजडाकायूकादिसंहितं कर्मवययुक्तिं ।
जदिषद्वसमाका वृत्तलीगनमासुत ॥ नैजद्वयुक्तिकार्ये वृत्तदीपायेका
मूयादाखेनांनैवृत्तं ॥ स्वाधिसूक्तनाकिनाये धीधयनीनूनयलीगनन
दवयादूका ॥ नैज ॥ माहनीयुं नक्षयवनलाकलागगर्भमिनीयवनला
कनूननसंयानया यवनाननददवयवनामायाउमलदूकाटिसिद्धया

उमलदूकाटियागिनीयादूका ॥ नैजयुंसर्ववयवमूदांदर्भय ॥ ऊय ॥ मू१०
॥ मुनि ॥ अषनसर्ववीर्यागिवलवार्यविवर्द्धनं । लयभादसदालकायुं न
दवयनमासुत ॥ अषनार्चनविधेरुत्सर्वयनियुक्तममु ॥ ४ ॥ ॥ सर्ववयव
युक्तं ॥ नैजद्वयुक्तिनाधनवकासनाययादूका ॥ नैजद्वयुक्तिमहासर्ववयवमूर्कय
यादूका ॥ श्रावार्चनादिध्यानं ॥ नैजद्वयुक्तिमवर्द्धयुगीकवृत्तं वयवार्कद्विलाव
नं । उत्पलं यद्वरुसुश्रुमहायावधुनालयं ॥ साक्षाद्वीमहासुक्तायान

नास्ययनिस्त्रिंशं। ध्यायत्सर्ववर्णदत्तां सर्वसम्यक्लिंदायकं॥ शृङ्गलि॥ जेंऊ
वगुष्कं यश्चकंषकं वगुष्कं यश्चकं वगुष्कं सर्वदायावत्ताकनु वगुष्कं लोभनमा
सुन॥ जेंऊ नमा हगवनिहृत्कमलाये फां नुं वना खे जेंऊं पूं शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥
किनाये मनः पूना मिशानन्ददवयादूकां॥ जेंऊ मायाये मूत्रं वृत्तं नखर्जला
कलागगर्भगामिनी स्वर्जला कन्यमृगसंवा निदी स्वर्जनन्दद वस्वर्जला
वनीमलककाटि सिद्धवनीमलककाटियागिनी यादूकां॥ मूर्धादर्भय॥ व

लिं॥ ऊय॥ १०॥ मुनि॥ सर्ववर्णयावनंयूर्ध्वं यविर्गदह (अधनी) वृद्धासिद्धि
क्रियासर्वं वृत्तं वृद्धवर्जं नमा सुन॥ सर्ववर्णं न विधेत्सर्वं यविर्गदह म
मु॥ ७॥ ॥ कालियूजनं॥ जेंऊ फां शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ कालिका
दवी श्री यादूकां॥ शृङ्गलि॥ नमा सुन॥ नमा सुन॥ नमा सुन॥ नमा सुन॥ नमा सुन॥
शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥
शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥
शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥ शृङ्गलि॥

मांस (अ) निग हाऊ नि। जाँ जाँ दूँ न क दू मू खा द वा मा मां य म्भ नु सर्व दा। जें ऊ
 का ल मा न न द मि त्या दू ना न न्दा य य व रु न । स द्वा या य वि नि र्म कं व लु ली म न मा
 मु न ॥ जें ऊ कि नि र वि च्च का दू ना य दू ४ वूँ न त्वा (धे ४ हाँ हाँ दूँ दूँ) आ ह्वा हा कि ना
 ये य ४ य नाँ ख लु सा न न द द व या दू काँ ॥ जें ऊ जाँ जूँ न त वूँ नु वूँ ना ल नू न न
 ला क हा ग ग र्द म मि नी नू न न ला क नू म ग र्द यो वि जी नू न ना न न द द व नू
 न ना म्वा नू न न ल दू का टि सि दू नू न न ल दू का टि या मि नी या दू काँ ॥ या नि

मू डां द र्भ य ७ ॥ व लिं ॥ ऊ य ॥ खूँ १० ॥ मु नि ॥ न म रु का लि का द वि रु द्वा नि र्वा ल दा
 य का । या वि (अ) क र्ण यं धा रं का ल मू लू र या य रं ॥ आ य यू य य (अ) र्ण यं ल
 द्वा स म्भ र्दि दा य रं । का ली म नु र मो ली न मा न न्दा सा मू गा व नू ४ ॥ का ल्य च्च न
 वि (धे) रु त्स र्च य वि यू र्मु म मु ॥ ६ ॥ ॥ या य द दू नू लु ऊ यू ऊ रं ॥ जें ऊ नि व नू न
 क म सा स ना य या दू काँ ॥ नू लु ऊ स ना य या दू काँ ॥ जें ऊ म्माँ स स त्वा य का म सा वि की
 द वी श्री या दू काँ ॥ आ वा रु ना दि क्षा र्ण ॥ जें ऊ व नु का वूँ टि म हा र ऊ वि न रा व

वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ यत्तु यावत्तु मादवी वनदा कमसाहया ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ४ साह
ग्यसिद्धि कामदा ॥ गं कामसाहि कांदवां वक्र भक्ति वक्ष्यते ॥ याज्ञ लि ॥ ग
स्मिद्धि मुहि ॥ स्नान मष्ट ह वै व संयुतं ॥ अष्टाष्ट कनु ह द न वृक्षु ली ग न मा
सुन ॥ जं ज न्र द्या व दं ह स न्नात्म ग त्वा धिप न य क्रिया भक्ति य न य निर्वो ल व लि
कादवी धी या दू कां ॥ धनू मू द्या ॥ व र्ति ॥ ज य ॥ सं ॥ १० ॥ मु नि ॥ नृ लु उं काम सा
दवी सर्व सु मु न का व का ॥ नाग ॥ भ का न भ या वै नि सर्व सिद्धि यु दा यिनी ॥

नृ लु उं ज न वि धि सु त्त्व र्च य नि यूर्ध्व ममु ॥ १ ॥ ॥ याग ॥ य स द ज न्त्र न ॥ जं ज
गूर्या गी मा स ना य या दू कां ॥ जं ज स द ज स ना य या दू कां ॥ जं ज म् वं व उ म स न
ज सा न का द वी धी या दू कां ॥ आ वा रु ना दि ध्म नं ॥ सूर्य का टि य वै ना का र्ग य ग
ह र्क पि ला व नं ॥ वि न्दु या ग मृ ना यूर्ध्व मृत्य ला व न दा ह या ॥ ना ना र्क का व द्वा
ही ॥ नृ लु काम सु सि द्धि दा ॥ गं ना ज सा न का द वी वि षु भ किं व क्ष्य य न ॥ या ज्ञ
लि ॥ वसु १ या १ नु ह द न ॥ जं ज यूर्ध्व गि त्री ग था ॥ काम नृ ह द नं या १ वृक्षु ली ग

नमामुन॥ नै० ऊ० य० व० म० द्या० न० दू० द्या० न० म० खी० र० म० शी० ष० ना० व० म० यि० व० रु० रु० न० व० नू० नू० द्या०
दू० रु० रु० द्या० दू० शी० रु० रु० द्या० दू० रु० वि० श्या० न० त्वा० धि० य० न० य० क्लान० न० कि० य० ना० ये० नि० र्वा० ल० का०
लि० का० द० वी० शी० या० दू० का०॥ व० लि०॥ या० नि० म० द्या० द० र्म० य० ७॥ ऊ० य०॥ मू० १०॥ मु० नि०॥ नै०
ऊ० खे० द० ऊ० ना० ऊ० सी० द० वी० ना० ऊ० सं० य० हि० दा० यि० ना०॥ सर्व० वि० द्य० वि० ना० ये० सा० य० सर्व० श्र०
य० वि० मा० य० न०॥ स्व० द० जा० र्च० न० वि० ध० रु० त्स० र्व० य० वि० यू० र्मु० म० मु०॥ ८॥ ॥ या० य० वा० म० या०
क० ऊ० यू० ऊ० न०॥ नै० ऊ० व० क्ल० म० दु० सा० स० ना० य० या० दू० का०॥ नै० ऊ० या० क० जा० स० ना० य० या० दू० का०॥ नै०

ऊ० मू० गौ० नाम० सा० न० का० द० वी० शी० या० दू० का०॥ आ० वा० रु० ना० दि० ध्वा० न०॥ नै० ऊ० का० ला० स० म० य० र्ग०
श्र० य० म० व० क० यु० ऊ० व० द० क०॥ का० य० वि० न्द० लि० यू० र्मु० लि० या० नि० जा० न० व० ना० रु० या०॥ सर्व० श्र०
न० व० श्र० द्या० सर्व० स० म० हि० दा० य० का०॥ सा० नाम० सा० न० का० द० वी० नू० द० न० कि० व० ध्वा० य० न०॥
श्र० ऋ० लि०॥ उ० उ० म० का० न० य० रु० ल० ष० दू० व० क्ल० स० म० नि० र्ग०॥ म० रु० सि० दि० स० मा० र्ग० क्ल०
ली० म० न० मा० मु० न०॥ नै० ऊ० दू० गि० व० न० त्वा० धि० य० न० य० क्लान० न० कि० नू० य० ना० ये० नि० र्वा० ल० रु० न्द० या०
द० वी० शी० या० दू० का०॥ म० द्या० द० र्म० य० ७॥ व० लि०॥ ऊ० य०॥ मू० १०॥ मु० नि०॥ या० क० ऊ० नाम० सा०

दवी सर्वकामरुल्यदा। अथ मूकषु सर्वेषु सर्वभानिकर्तयनं॥ या कजार्चन
विधिरुत्सर्वय विधुर्लुममु॥ २॥ ॥ गनः या गयूजनं॥ जेऊ आशनादि ८॥ जेऊ
कोविष्टुद्विचक्रसनाययादूकां॥ जेऊ॥ अनाहन मलियूत्रक स्वाधिरुत्तन आश
न आशुनं यूजनं यूर्ध्वव॥ नदयवि॥ जेऊ अयनायनचक्र गूर्यागीनवक्रम
लुलकं निनञ्जनकमलासनाययादूकां॥ जेऊ मलायासनाययादूकां॥ जेऊ
कं अग्निमलुलायदधधर्मकलात्मननमः यादूकां॥ जेऊ संसाममलुलायया

उभकलात्मननमः यादूकां॥ आवाहनादि ध्यानं॥ लाक्षात्रसमादवी जवादा
डिमनागिणी॥ उगुङ्गयानयो वन्या शिनशावा नूहासिनी॥ मदिमानन्दवेनया
दधमयागुङ्गधविनी॥ खड्गविभूतवक्राङ्ग डि लिमं मूङ्गनगथा॥ गदायध्वव
नं यार्णदकिरुसुविनाजिना॥ रुटकाङ्गुगधल्लवकयालखद्राङ्गकमूर्क॥ नीला
त्यलार्यविन्द्वामरुसुषूधविनी॥ मलिवत्तकनाटाय सर्वलक्षणवद्विनिगा॥
दिव्ययन्मासनादवी दिव्यमानन्दनूपिणी॥ सर्वसिद्धिकरीदवी सर्वसंयददा

यका॥ सर्वभानिकयानिर्णयं सञ्ज्ञासो राग्यमृद्विदां सर्वेषां भवदवानां दर्शनं
यत्र मामृगं॥ सर्वभानामहदवी वायुलादिवानूयिणी॥ शुक्ललि॥ जेंऊ ज्ञान
मूलिनिवाकावमांकावश्चरुमन्विता॥ निष्कलं निर्मलं पूर्यं कलुलीगनमासु
न॥ मनु॥ अद्यावदववगासि॥ ॥ जेंऊ मूं सिद्धयेयाददययादुकां॥ जेंऊ मूं मृ
द्वयेजानूदययादुकां॥ जेंऊ मूं विद्युतायेउरुदययादुकां॥ जेंऊ मूं लक्ष्मि
कयादुकां॥ जेंऊ मूं दीपायेनालीयादुकां॥ जेंऊ मूं मालिन्येददययादुकां॥

जेंऊ मूं भिवायेकलयादुकां॥ जेंऊ मूं वसुमखायेमुखयादुकां॥ जेंऊ मूं नाम
वमायेनामयुगदययादुकां॥ जेंऊ मूं कदुकायेकलुदययादुकां॥ जेंऊ मूं रु
त्रिकभायेशुद्धयादुकां॥ जेंऊ मूं मलामुखोभिवसेयादुकां॥ ॥ निद्वदभा
॥ ॥ जेंऊ मूं सर्वज्ञगायददययादुकां॥ जेंऊ मूं नृमृननजामाविनीनि
यिनाभिवसेखायादुकां॥ जेंऊ मूं अददवदनीनृनादिवाधायभिवसेव
षट्पादुकां॥ जेंऊ मूं वजिनवकुधनायस्वर्गकववायदुकां॥ जेंऊ मूं

[illegible]

प्रपूरेन वायमाह श्वत्री भक्ति स हि नायव लिं गृ द्वा २ स्वाहा ॥ त्रें ५ यें ५ यव वर्णका
 लक्ष्मणाय वल्लुहे न वायको मात्री भक्ति स हि नायव लिं गृ द्वा २ स्वाहा ॥ त्रें ५ टें ५ टव
 र्ण नू द्वा सक्ष्मणाय कुधहे न वायवेष्म्वी भक्ति स हि नायव लिं गृ द्वा २ स्वाहा ॥ त्रें
 ५ गें ५ गव वर्ण ऊय न्नाक्ष्मणाय उन्नरुहे न वायवात्री भक्ति स हि नायव लिं गृ द्वा
 २ स्वाहा ॥ त्रें ५ यें ५ यव वर्ण च त्रिगुणाय कया सह न वायव्यं न्यासी भक्ति स हि ना
 यव लिं गृ द्वा २ स्वाहा ॥ त्रें ५ यें ४ यव वर्ण नका मुकक्ष्मणाय हीषधहे न वायवाम्

सुममकिसदि नायवलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ जें ५ मं ४ भवर्जदवीकाष्टदशायसं हा
त्रहेत्रवायमहासद्धा मकिसदि नायवलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ जें ५ रुहुकहेत्रवाय
वलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ विपूनाक ॥ अशिवनाल ॥ अशिकि ॥ कालाख्य ॥ कयासीम
॥ नकयाद ॥ हीमनूय ॥ हाटक ॥ अवन ॥ मघरासुन ॥ ॥ जें ५ लूं ० न्यायवलिं
गृह्ण २ स्वाहा ॥ वूं अयय ॥ मूं यमाय ॥ दूं नेर्नय ॥ वूं वनूअय ॥ यूं वायूव ॥ सूं व
वनाय ॥ दूं ० ॥ मनाय ॥ अं अयस ॥ उं उदय ॥ ॥ जें ५ वलुयेवलिं गृह्ण २ स्वाहा

॥ द्युक्षये ॥ महानासाये ॥ दूर्मुखे ॥ सुमुखे ॥ वलाये ॥ अवले ॥ यथमाये ॥ धात्राये ॥ सो
माये ॥ हीमाये ॥ महावलाये ॥ ऊयाये ॥ विऊयाये ॥ अजिनाये ॥ अयनाजिनाये ॥ महा
कृताये ॥ विनूयाये ॥ शुक्राये ॥ आकाशमातृकाये ॥ जानलाये ॥ संहारये ॥ दंष्ट्रा
ये ॥ शुक्लवले ॥ यियाये ॥ यूषाये ॥ अग्नये ॥ मग्धलाये ॥ रुद्रकाये ॥ सु
रुद्राये ॥ रुद्राये ॥ हीमाये ॥ सुरदिकाये ॥ जें ५ अद्यावज्जं ० न्यादि द्वाविम
आविनीत्यावलिं गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॥ ननादीययकालन ॥ जें ५ ० ॥ दीयंयका

सय २ स्त्राला ॥ जे ५ स्वस्ति कू र्या त्स्दा विघ्न १ स्वस्ति दवा धिदव गा ॥ या गिनी स्व
स्ति सर्वथ १ स्वस्ति या ० १ १ कृष्णका ॥ स्वस्ति कू र्या त्स्दा माया स्वस्ति विघ्न विघ्न
ना ॥ य धिया दिस दा स्वस्ति स्वस्ति ना गु व न य र्य ॥ या गिनी स्वस्ति या ० १ १ कृ
शाय दि १ दव गा ॥ स्वस्ति दवा धिदव सो म नु मूर्ति कू न ग य ॥ ना रि कू लु स स
ह गा १ कि दी य म ना रु र्वा ॥ यु का १ य न म र्ग १ कू ल न वि कू ल न सं रु र्वा ॥ रु व क ल्या
लि ग या १ स्वस्ति कू ला गि दव गा ॥ व दि गा दव गा १ सर्व १ ॥ नि वू र्य न मा मु र्ग

॥ श म य लि ग र्य दायं कू ल नं या य ना म नं ॥ द रु नि सर्व या या नि स य कू ल न क
मा य र्वा ॥ न्ना वा रि क मि द दायं य वि र्ग द रु ॥ अ ध न ॥ सर्व दाय व ला क नु सर्व
ग नि मि ना य र्वा ॥ स्वस्ति न व म ला मा वि यु म कू मू र्य व र्ग न ॥ व नु दी य वि नि १
कान् लो ग्ग मा कू य दाय र्वा ॥ स्वस्ति अ नि स दा ल कू ॥ स्वस्ति कू र्वा नु म कू ल ॥
अ य श म नु १ न्ना र्वा द क न सं या कू य र्ग न ॥ जे ५ न्ना र्वा व म कि क म ला स ना य
या द का ॥ जे ५ दाय स ना य या द का ॥ जे ५ न्ना र्वा व म य शी या द का ॥ न्ना वा रु ना

दूकां॥ जें ऊं भूं वडि लवड धनाय छगण कववाय दूया दूकां॥ जें ऊं भूं नाम्ना
 निखन्नूत्तय भक्ति सह ऊं विनय नूयाय वोषट् दूया दूकां॥ जें ऊं भूं ४ नमस्तु स्यन्न
 नन्न भक्ति श्री दूं मलाया गुय नाम्नाय सह मा दाय दूं रुट् दूया दूकां॥ ६० तिष
 उडू॥ ॥ श्री धाव वड नामि॥ जें ऊं भूं मदी॥ ॥ श्री विष उडू॥ जें ऊं भूं वां वूं न
 रों॥ ॥ धनूया निमूदा॥ वतिं॥ ॥ श्री ॥ ऊय॥ मुति॥ जें ऊं भूं सि स रू
 वनूयं स्ति निमयि युवनं सर्व दू वूं वमयस्व स्व सर्व सिद्धि रू

त्वसूत्रसूत्रनवं साधका सिद्धि कार्म। सर्वकर्मयुक्ता वासकलशुद्धमयं वा
 दिमध्यान्तमस्तु संसात्रसात्ररुद्रा सिमिवरुद्रवृत्तं न ऊच्यते नमामि॥
 गतायुः पूजा दीयमूलाया यागिनीयुहनिवीन ऊर्ध्वं नमस्कात्रयिर्गुणा
 मयः॥ नैऋतीसम्वत्सरा सुख॥ ॥ दक्षिणायामः ४ यजुर्वेदलिङ्गः ४ यागि
 न्यादि सर्ववीन ऊर्ध्वं नमस्कृत्य॥ दाययाशनमनु॥ नैऋतमूलास्तु
 आवहिस्तु ४ सर्वारुद्रा निनामयं। अमृतं काययुद्धं मध्वमं स्वयं वंश

ॐ॥ अनादिवाधसंकाशमरु नमिमिवायहं। शुक्तिमूकियदं दीर्घं रुद्रया
मिसदादिर्गं॥ वेंऊ अमृगनमृगनमृगनाह वायवकूकुडि न्येखाहा॥ वेंऊना
वीनूं यवनरऊ४यू॥ अकिनू यिनीयकागमकयखाहा॥ अमूककामयुनूय
सादाहूयानंय॥ १०७॥ कासहृदं दीर्घं यागयामि मिवाहंखाहा॥ वीनद्वयान
वला॥ ॥ अथखवन॥ वेंऊमहासमयसंहरं दिव्यमनायकाहवं। नवद्वयस
मायूकं कुडिइइंनमासुन॥ इद्रया७॥ ॥ हवन॥ निर्मात्यं निर्मासंदहं य

विर्गदह॥ अधनं। यसादाहृगहाकयं कुडिइइंनमासुन॥ इद्रया७॥ ॥
ऊसवन॥ मत्स्यामांसं महामांसं रुकयं ऊनकंवनं। वयुकावयवूं दिव्यं कु
डिइइंनमासुन॥ इद्रया७॥ ॥ अथवन॥ आहूविज्ञानदं दीर्घं वृक्षसमय
वर्चसं। नऊसीमियदं लीनं वृक्षलीगनमासुन॥ इद्रया७॥ ॥ सर्ववपू॥ स
र्ववपूयमनं नमस्काववाकं॥ सर्ववपूनमस्काव॥ सर्वदवसमाश्रितादर्थनं
यावनं यत्नं सगर्भनं यायनागर्भनं॥ हायभादसुखं दहि दहिलक्ष्मायग१३

766

REPAIR

ASHA ARCHIVE



वसुगंलनाविनाशितार्क सादवीयन्नरुसायनमनिसननं यागुवध्रीकूजभी॥
कायविन्दुमूर्धादयोगदायागिनीपूर्वकं॥नेऊकायंविन्दुलियूर्ध्वंयनमृगमयं
दिव्यमानन्दनूर्यंसातनन्दनन्दमूर्तिः॥सकलसुखगणः॥सर्वदवाधिदवाशरु
गयगादिदियका॥स्तिमित्रयिगुवनंसिद्धिगन्धर्वनामः॥वायूर्ध्वंविश्वनूर्यंस्ति
मिमयिगुवनंसिद्धिसंहावकावी॥यादंयावधददंइतिनरुयद्वंयायविद्या
नकावी॥ध्यानंसावगावमत्रलरुयद्वंइ॥खदाविद्युधार्गं॥सोराव्यंमृद्विमि

द्विस्वरिमगववदावाऊवाऊव्वीर्यंसादवीयन्नरुसायनमनिसननंयागुवध्रीकूजभी॥
नामनाथ॥॥नूगुऊयनमयूर्ध्वंदूर्गिंकूया॥नेऊयासावकिर्कगमखायादि
॥याकऊयूर्ध्वंदूर्गिंकूया॥नेऊसक्तानंमनूमा(र्जल)यादि॥॥म(क्ष)शुसासन
स्कांरूयादि॥॥खर्पुवामरुसिद्धिंरूयादि॥मामावका॥॥खदऊयूर्ध्वंदूर्गि
रूया॥धीसम्बर्क॥याउसाकू॥॥यीनयगासनस्का॥नूविना(म)॥॥मांसा
लियूविनकांमयायद्वयदानं॥उंनूयवसादकत्य॥उंनूययादि॥वायूर्ध्वंरुम

गर्हं नृसिंहसिंहसिंहं कांभयाद्यद्वयं दत्त्वा स्वच्छन्दमूर्तिः यत्र मकूलसुवर्ह
त्रयामनुमूर्तिः ॥ नृसिंहः ॥ यजुः सन्तद्विगतहयहर्षं चानयायं निर्हन्त्यायुः
श्रीकान्तिलक्ष्मीविनविजयतावं भानिदं यद्विदं स्यात् ॥ सुवर्णवद्वाननवा
जिदानमनं नयि। वीराक्षं यावदानन नृसंखरुलसमयत् ॥ यजुमाननिन
वात्मन सुवर्णमूर्त्यवावलीमांसासि यन्निगदित्वं कांभयाद्यद्वयं सुवर्णम
र्हदद ॥ ॥ यनयागिनीयह निवीनऊन नृभीर्द्विद ॥ ॥ नरः ॥ यद्वनानि

यथासंखर्वं सहस्रकथं ॥ ॥ नरः ॥ समयार्कसर्वत्यः ॥ समयं दानव्यं ॥ यागिनी
यह निहिः ॥ सर्वः ॥ यावद्वाननं नय्यं ॥ ॥ नृसंसाय (०७) ॥ जंऊजयनिद
व्याहृतयादयद्वर्णं त्यादि ॥ जंऊनमः ॥ श्रीनाथयत्यादि ॥ द्वां यादूकां ॥ सुवर्ण
यावस्वीकारं ॥ यावद्वाननमूर्त्यवत् ॥ यावद्वाननमूर्त्यवत् ॥ यावद्वाननमूर्त्यवत्
यागिनीयादिसकलसं ॥ उकावाद्यत्यादा ॥ ॥ यावद्वाननमूर्त्यवत् ॥ गङ्गायुक्त
वनमर्माद्ययमूर्त्या ॥ नृजवनी ॥ नृमनी ॥ सिं ॥ नृसागवकोसिकीमहिनदी

काव निवात्रागसी। के सासु सनसुगीय रुवगीवका लुहा लुहादकं गार्थस्त्रा
नसहप्रकाटिरुसदंष्टीवकुयाशदकं ॥ ॥ चन्दनसिन्दूरमाहनी ॥ ॥
चकानकरवत्यादि ॥ दद्यामीर्वा दंस्त्रजिनसिनिधाय ॥ गत्युष्यं गृहीत्वा ॥
जंजम्रमयूर्ध्वगममित्यादिमनुष्मत्मागीर्वा दं ॥ ॥ अर्धवत्युयविनिधाय ॥ ॥
हमनुष्मत्सलीनं कृत्वा अमुष्मत्सलिविसर्जनं ॥ विनावम्य ॥ गुग्गुलुसार्वनयूष्यं
दवगार्थं समर्थय ॥ मूढासायनं ॥ वात्रवकुसमसायां सर्ववर्षु द्विजादयः ॥

चकान्नवगमनेव सर्ववर्षु यथकथयथक ॥ वतिस्त्रानद्विय ॥ ॥ गतायथदा
स्यमानं शर्क ॥ वाक्कथय ॥ अन्नमेहान्नसंदिशं सर्वद्वगसदादिनं ॥ सुकलं नि
ष्कननिर्णय ॥ यद्ययर्गनभासुन ॥ साधकनचगृह्णाया ॥ सिद्धानां च नूरुद्वर्ष
॥ गत्यत्र विविधशर्क ॥ वात्रस्यानन्दकावर्क ॥ ॥ निवन्तुयहमनु ॥ ॥ गतावि
विधान्विननयथ ॥ सर्वशर्क ॥ गीगवायनृत्यादिविविधविलासं ॥ शिरकं
जगव्यं ॥ ॥ समयान्नकावय ॥ समयग्रहणं ॥ स्त्रायिगामृगवृह्मादमृगं गृह्णा

वासर्वत्यादद्यानेत्रपि यावत्तन्मन्त्रं नर्यान्कर्तव्यं ॥ त्रैलोक्यमिष्टमासनस्कां
त्यादि ॥ ऊष्मन्निदद्याद्विना सर्वं यूर्ध्ववत् ॥ यजमानस्य नृमूककामनार्थं यन्नि
वार्षिकं यद्विना नानि निमित्तार्थं वा नान्यत्र विधिः सर्वं यन्निपूर्वमुक्तम् ॥ आ
ह्ना २ कात्रयत् ॥ यावत्तन्मन्त्रं ॥ ॐ मिष्टाजनविधिः ॥ ॥ अथानननमान
ह्नाथार्थं नर्या ॥ सर्वं चिद्विष्टमकयावत्तन्निधाय आचार्यस्मात्प्रदक्षिण
याममस्तुलाय लिक्काया ॥ शुक्ला ॥ शुक्लमस्तुलाय ॥ न्यासः ॥ त्रैलोक्यं हृदयाय

नमः ॥ यादूकां ॥ ॐ त्यादिषु ३ अक्षराणां ह्नासः ॥ अर्घ्याय यूर्ध्ववत् ॥ त्रैलोक्यं ॥
आत्मयूर्ध्ववत् ॥ ॥ नमः ॥ यूर्ध्ववत् ॥ त्रैलोक्यं आध्वन्यं किं कमलासनाय यादूकां ॥ ८ ॥
त्रैलोक्यं आध्वन्यं सनाय यादूकां ॥ आवाहनादिध्यानं ॥ धूमवर्षं महान्तं चक्रवर्क
वितातनं ॥ मूलस्य यत्र रुक्मश्च ॥ नृणां शास्त्रं यत्तन्निर्गमं ॥ तामावृत्ता गता दवी
नदुयादिवा नृयिणी ॥ मातङ्गमाहिनी दवी निर्मात्य स्तुतुं नृयिणी ॥ शुक्लसि
३ ॥ त्रैलोक्यं ॥ ॐ सिद्धिमान् ॥ ह्ना ॥ त्रैलोक्यं ॥ ॐ सिद्धिमान् ॥ ह्ना ॥ त्रैलोक्यं ॥

यादूकां ॥ ॥ शिवायामम ॥ ॥ नें ऊ या ना ये यादूकां ॥ दक्षिणम ॥ ॥ नें ऊ री
ष्याये यादूकां ॥ नृपम ॥ ॥ नें ऊ नो दा ये यादूकां ॥ ॥ नृयय ॥ नें ऊ ना ऊ मा न
॥ ॥ नृवी द वी यादूकां ॥ नें ऊ व न्द मा न ॥ ॥ नृवी द वी यादूकां ॥ नें ऊ वी न मा न ॥ ॥
॥ नृवी द वी यादूकां ॥ नें ऊ ऊ य मा न ॥ ॥ नृवी द वी यादूकां ॥ नें ऊ उ च्छि मा न ॥ ॥
॥ नृवी द वी यादूकां ॥ ॥ शिवरूप ऊ न ॥ नें ऊ ह न र ॥ यादूकां ॥ नें ऊ पि म व र ॥
॥ यादूकां ॥ नें ऊ वा द स र ॥ यादूकां ॥ ॥ नृवा य दि व र ॥ ॥ नें ऊ नृ द व

दूकां ॥ नें ऊ सि द्ध यादूकां ॥ नें ऊ व स ल यादूकां ॥ नें ऊ स व स ल यादूकां ॥ ॥ दानयू
॥ नें ऊ मि वा ये यादूकां ॥ नें ऊ मु न न म ॥ यादूकां ॥ नें ऊ नृ क्ष य न म ॥ यादूकां ॥ नें ऊ
उ लू का य न म ॥ यादूकां ॥ यूर्वा दि ॥ ॥ किं कि ना य य क क य ॥ ष ॥ मा वा क ॥ स
ह न मूर्धा द र्म य ॥ व लि ॥ धू य दा य ऊ य मु नि ॥ धू म्भ र्दी य द र्द न सि न रू वि
ऊ र्द गी नि न र्द क नालं रु स स्व र्द य क र्दि न द य व वि ध र्म गी षू मूर्त्त क या लं ।
य कान्क मत्स्य मां सा स व न स वि वि (धे र्मा दि र्म य न स र्क मा न शी गी स र्द व र

गलयनिवृत्तं नोमिसाक्षि कृत्तार्थं ॥ निर्मात्यस्तु धूमं द्रव्यकन विधुनोवेकम्
त्यं वदन् वामधत्वा विनयस्वयस धूमकनं प्रदुमाला सदा यत् ॥ वामानुस्का
वदवीयुगनकनधनी दववत्सर्वपूया याधत्वा नकाशविन्दुं नमयिस्वक
नी नोमिवाक्षि कृत्तार्थं ॥ नमस्तु न ॥ रुत्तगाम्भूलादिमुखमुद्वि ॥ मुखोक्षिर्ध्वं
दशा ॥ ॥ जेजुनकानकनियरित्वा विद्यायी ॥ यूर्यसमर्थयत् ॥ ॥ यून
विद्यायी ॥ यूर्यं गृहीत्वा सर्वथा गुप् ॥ स्कार्कस्कार्कयूर्यं दशा ॥ आगिनी

यत्तु निस्तु यूर्यं गृहीत्वा ॥ जेजुनम्वपूर्वगतमित्यादि ॥ यरित्वा स्वस्वमित्रसि
धर्क्यं ॥ ॥ न्यासामुलयश्च वलिं कन कृत्तार्थं विसर्जयत् ॥ यश्च वलिं स्नान
कुरु दियत् ॥ कन कृत्तान निर्मात्यं दियत् ॥ ॥ नन ४ कन कृत्तय विशादक
नसर्वाहियकं दशा ॥ नृमृगद्यटद्वयं यजमानसमर्थ्यं ॥ जेजुया ॥ गभा
गुवनम्वनीत्यादि ॥ ॥ नना गुप् मलुलवृत्वा कलिनयश्च वलिं कानिधा
यस्तु स्निग्धानुर्वद्वाश्च लिर्वृत्वा यत् ॥ ॥ जेजुनमस्तु हेनवदववीनपूया

वनामकं । वीरलीहे नवीयकं सर्वदव वृद्धवनी ॥ अमृवीसम ॥ सर्वत्र
वगानं यत्रममृवो । यथाकं विविदं सर्वं रुगुलिर्का अयूजनं ॥ उनाधिकं य
थायूजा यदि किदुम किदुकं । संयूक्तु सर्वं एवायि कृम्यगां यत्रममृवो ॥ ग
कृगकृग ॥ सर्वं स्वस्वस्मानं गनं सय ॥ नद्वनद्वमरु ॥ नि यूनवा विज
यायच ॥ साक्षा ॥ नननमस्तुत्य ॥ नदीयवृत्ति काद्वयं दवस्मानदीयराजन
निष्पय ॥ यूनवृत्ति काद्वयं गृहात्वा सर्वं जनोदमयित्वा दीयराजनस्काय्य

॥ यूनवकवृत्ति कां संमूखाकृष्या ७ ॥ ॥ अथमिथनमस्तुत्य ॥ नननविधि
नाद्वि दीयरागक्रिया विधिं । निष्पित्य क्रियनमन्ता सर्वं आय विमावनी ॥
यस्तु यास्तु न थावाग याति न भक्तु याति न । नगादि सर्वं कार्यं ययुगसं
दीयरागकं ॥ नथमव ॥ नं अमनागयाउ न्निकलूषक नगायवृद्धनवृद्ध
नानाविधयुगान्न विविधरुयगृह सर्वं उत्यागजात । दीक्षायास्तु यस्तु
नविममिगृह ॥ स्थायनदवगानी स्वयं श्री दीयरा ॥ अस्तु हिमनरुहदा

शुक्तिमूर्किंददातु ॥ ॥ नूनिधीवदुद्वायावमानधीकलनाथविनविग
इद्वनाशदीययागविधिः समाया ॥ ॥
ॐ नमः श्रीमहादेव्यो ॥ ॐ नवउवाच ॥ वीनयाननसंयक्ता दद्यात् पूजां क
नारियः ॥ कलेकविंशमूदुन दिव्यसाकं सगच्छति ॥ भित्तमकिमयवक्ता
मयविष्णुः ॥ यमिस्त्रिगः ॥ मयवद्विष्णुनादित्यः ॥ यन्त्र (येववि) मयन ॥ मय
म (य) समूह्यनं ॥ ॐ साकं सववाचनं ॥ नूधमध्यादियज्ञानां यत्तु संयवि

कार्त्तिकं ॥ विधिवद्वाचयाननं गच्छ संनाय संभय ॥ वक्त्रम (य) गुणुजान संभय
ईमयिसूदनि ॥ वाद्यायनसमंयुक्तं संवत्तनाय संभय ॥ नूनिधिवरुणाजनादि
रुलं ॥ ॥ पार्श्वकांचनत्रोयाकाचऊनिर्गमूकाकयालाहव विष्णुमिष्टमयं व
कामदमिदं रुमश्रियसूटिकं ॥ तानं याति दमय सिद्धिऊनिर्गंधानासिकला
हवं कायालं मूटमनु सिद्धिऊनकं मूकियदं मोकिर्क ॥ नूनियायनिर्गुनय ॥
मयूनकाककुसिकं टिटि रं वटकं शुका ॥ खवनेन समादूत्वा खवनेन उन्म

उच्यते ॥ खचनविधिः ॥ ॥ नृध्वधनमिवाध्वनरुत्तुर्कचवनाहकं । खचन
नुसमादृत्वा खचनं ऊनमउच्यते ॥ खचनविधिः ॥ ॥ ऋषकचयमं खचनं
मिसर्यश्च मधुकं । ऊनचनेन समादृत्वा ऊनचनं ऊनमउच्यते ॥ ऊनचनविधिः
॥ ॥ ऋषलालुयवकामित्रसान्ध्यश्च समाचन ७ । ऋषननुसमादृत्वा ऋष
नं ऊनमउच्यते ॥ ऋषनविधिः ॥ ॥ नृनयाननसंमिधं सर्वचनूरुमारुमं । स
र्वचनं समादृत्वा उद्दिऊनमउच्यते ॥ सर्वचनविधिः ॥ ॥ सूगन्धिभसिसं

हर्नयवः ऋधूमभकुना । नवद्वयसमाहकं दवार्थकावय ७ प्रिय ॥ नवद्व
यविधिः ॥ ॥ गुषानकालिकाचनं नकचनं दिवाकरं । वामदवीसरुम
ध्वनी मिवाद्यामनससुथा ॥ दवार्थकनकर्माणि कावयश्च सदाप्रिय
। नकं प्रियगु ४ षट्काणमद्वन्द्वधननाकृतिः ॥ कार्यकावयकर्तव्यमित्य
नूकमया ऊय ७ ॥ प्रियकावयविधिः ॥ ॥ वर्हिः ४ ऋगानथायीना दृष्ट्वा
नीलानथेववा । नकवर्हिगुकर्तव्या न ऊय दीयवर्हिका ४ ॥ वर्हिकावि

वि१॥ ॥ कृष्णकृष्णमहिर्यं मिवागृधुम्यकन्यका। चतसामवतकनन
अयदायवृत्तिका॥ वञ्जनवक विवि१॥ ॥ मान्दहायिगृहावेव। गम्य
अवक्रयागक१। दीयहृदलमागृह। सर्वयायेयमूचन॥ दीयहृदल
रुलं॥ ॥ यञ्जवन्धुमागृहं यनयुधुगुवृत्तिका। नयायकासयदीय
सर्वगुमिमिलायहं॥ दीयविधि॥ ॥ वृक्कृटाद्युयमा। एनमाहिर्यं मा
समूर्तमं याकजं कृष्णमासं च मृगमासं नकावय७॥ याकगु (भो के वं मा

सं मृगमासं नकावयदिनिया भननं॥ नृनिवन् विवि१॥ ॥ वन्धुवन्
वित्रावागं सुगन्धं स्वादूमादिनं। नद्वयं यनमंद वि। अद्विसिद्धियदायकं॥ द
यनिर्लुप्यं॥ ॥ नञ्चययनदू१। खिनं दूग्धं (नगन्धवर्जितं। ननद्वयं च नदवि
नि१ रुलं ननकं वृज७॥ निमिर्द्धमनद्वयं॥ ॥ निर्मलं कायकृष्णं कृष्णं
यायनाभनं। नूनन्दादि वनं दूत्वा युधुकादम्वनीगुण॥ दामरावना वि
वि१॥ ॥ वयापिर्यं सुसूत्रं मूणीनं वन्दनं तथा। वासमासीनं तथा वानमयो

षधं गथासमं ॥ याज्ञोषधौ ॥ ॥ विकटसेन वंशकं कालीवृक्षं वनादयत्
। काली कालवन्तनाय निलादिभक्ति संयुगा ॥ **आनन्दवन्तु उषधः ॥** ॥
(मधुमयव गालुल मलियक्ष्म मृनेर्युगं । लवणं मालिचं मुष्टि जातिम
लादिमिश्रितं ॥ येन वृक्षया ॥ ॥ **अथ वा उषध विषयः ॥** कसून कर्पूर
यागक सुकाला लवणं लवणं जागीरुल मन्त्रिच यिष्यली ॥ **ॐ निजं व**
वृक्षमिति गार्थमोषधं ॥ ॐ निजं मः समायं ॥ ॥

अथ यमसकाल निर्णयः ॥ मङ्गलवान् शुक्रवानो वृक्षवानो चतुर्था नृपमी
द्वादमी चतुर्दशी पूर्वमासी नृमावास्या तृतीया वृक्षनिधयः ॥ **हन्ती वाहिली**
यथा मद्या उल्लसन्ती विना विमखा अष्टा पूर्वोखा राशुवत्स मन्त्रि
षा उल्लसन्ती तृतीया वृक्षनिधयः ॥ ॥ **अथ वा ॥** न विवान् मनेष्वन नवमी
तृतीया दशमी यमी यान्यामः ॥ **न वामनान्य संया (म) अधिक रुतं ॥** ॥ **अथ द्वा**
दशी मासी यवर्त्य ॥ चतुर्विंश चतुर्दशी दमनावायनं ॥ **वेमष पूर्वमासी च**

लुप्ये १ यूजनं वाक्कलहाजनं गुनूदकिन्मा ॥ अथ यूलु मासां कदलीयनसाम्रा
दिरुले १ यूजय ७ ॥ आखाद यूलु मासां यविशानाहर्ण ॥ नमिन्नभको कार्ति
कावद्विपदद्वया १ वगुर्था नृक्षमा नवमा वगुर्दभीषयविशानाहर्ण ॥ आव
ल यूलु मासां सिन्दूरकूङ्कमचन्दनानाहर्ण ७ उत्पल यक्षयूषो १ यूजय ७ ॥
हादव यूलु मासां कटकी यूषो १ नानायहाने यूजय ७ ॥ आग्निनमासीयशुक्र
यक्षय १ दमदिनषष्ठ्यहर्णयनयूर्वकनानायहाने १ यूजय ७ ॥ कार्तिकयू

लुमासां दायेवर्चय ७ ॥ मार्गमिस यूलु मासां नासिकलजलमांसपिष्टके १ यू
जय ७ ॥ योष यूलु मासां भर्कनाशुत ७ गद्द १ यूजय ७ ॥ माघ यूलु मासां ७ धन
गन्धनेवशमितयूषो १ यूजय ७ ॥ फाल्गुन यूलु मासां स्वर्णवज्रनाहवे १ यंचकय
यो १ यूजय ७ ॥ वैशख यूलु मासां यक्षदमगिथिष्यहर्णयनयूर्वकना
नायहाने १ यूजय ७ ॥ ॥ ज्येष्ठ यूषा ॥ वैशाखशुक्रवतीया कार्तिकशुक्रन
वमी हादकपूषयादभी माघ यूलु मासां नविसंक्रान्तिदिनचन्द्रसूर्यग्रह

अदिन्याभययागमनदिनदवनासन्निधिगमनदिनविद्यायाफिदिन
शुभसाधकागमनदिनस्वकर्मदिनस्वकर्मनक्षत्रदिनकन्यायुगजान्मायूत
वदिनवाजादिसारुदिनमंग्रमादिजयदिनष॥ एतदुक्तुषष्ठीश्राव्तिनक
षुचतुर्दशीकार्तिकुक्तुनवमीमार्गमित्रशुक्तुनमीयायोषमुक्तुनवमीमाघ
शुक्तुचतुर्दशीश्राव्तिनशुक्तुनवमीचैत्रकामययादमीवेभाषादयनमीया
अष्टदशरुनाश्राव्तिनशुक्तुयशमीश्राव्तिनदशयशमीचनानिशुभयश

लिचनषुदिनष॥ आगिनीशुभकिंश्रिगिवासाधनयुजनं॥ नृमियसस्तका
लनिलुयसमार्य॥

रुनमध्यसुकाये॥ श्रीकलउवाच॥ दीययागविधिंवदश्रुदविकुजादि
न। स्नानं कृत्वा शुचिर्दहं यादो लकृत्वं किं नो॥ नित्यार्चनादि कं कृत्वा नाना
युष्याय हवनकेशनेव अत्रिं विधायये॥ सर्ववस्तुय हवनकेश॥ देवादेव विनिर्मु
क्तं कामकायादिवर्जितं शक्यादभिशुहवम्यशुद्धसत्यमयशुचो॥ अथयू

ऊंसमानम् लघुजागलुकावयः। कोमानीमूऊयत्यम् दासनाथोऽसमन्विते
शाववापिर्यं सुनही मूणीनं वन्दनं तथा। वालमासीन थावाल मखेषधिरथा
समं॥ नन दोषधिसंयुक्तेऽयादयुक्तालनं वल॥ नऊसायदलखायां लाऊ
वाङ्गादिद्वयनं॥ स्वस्वासनसुखासीन मासनाथोऽसमन्वितं। यथमयागिनी
दवाः ऋद्विसिद्धियदायनी॥ कुरुमं वदकमश्नु गलमश्नु नवात्मकं। अमुवि
यादिरिः कर्म गुनूयक्तादिरिः कर्म॥ शुभमलुलदवाशा गिवमक्तादि

संयुक्तं। शिखलुआमहावलि महायागीध्वनीयिय॥ श्रीकलुअश्नयागिन्य
धलुध्वकन्दहेनव। नन वीनऊनंदवि स्वस्वआसनसंस्तिर्गं॥ यूर्ध्वमर्द्धनं
यागीन्या हेनवार्कययूऊय॥ यऊमाननयूष्याथोऽसिन्दूववन्दनावर्गे॥
मारुनीयूष्यासंयुक्तं विविधायसंयुक्तं। मालायर्थवधूयश्नु दायगन्धानूल
यनं॥ लाऊयूष्यादुर्गवेव नऊऽयागसमन्वितं। आसनं मलिविक्तानि मत्स्या
मांसालियूनिर्गं॥ नमानवविधानन वमूलं कालसंयुक्तं। ननऽयश्नु वलिक्रिया

ऊयस्काशादिकावय॥यी भ॥यमलुलंकृत्वा वद्वाञ्छुलिनमस्तु न॥वृत्तन॥स
र्वकवीनास्त्वदवार्चनं वृत्त॥युत्तमाकाय॥०स्तुत्वा सर्वदवनमस्तु न॥वि
श्यायभक्तनदृत्वा दीययूजासमाचनत्॥विधानमयनात्मानं (मयिगव्यंय
यत्नग॥म॥क्षिकालषट्कालं विविरुसहसंयुगं॥न द्वाञ्छ सर्वकामार्थव
नामिव विविन्दकं।खवनंयुर्वकालेषु नेष्ट्या हवनमथा॥वायव्यांऊलव
नंविश्या दीमानं (मयनं वायव्यां सर्ववर्गंविश्या काली श्रानन्दयश्चिम

॥म॥क्षयायस्य संस्कारं यावददत्तव नृलुङ्गं।नृद्वयार्कं यावताम यागा (यकं
वकं विन्द॥नृन संस्कार्यनं दृत्वा सर्वाय वि मंचकं।स्कारकं स्काययल्लुक्का
वकदाय यावकं॥०॥निसंस्कार्य यागानि यश्चात्पूजां समालरु॥॥श्रीयुवा॥
स्मनर्लंकृत्वा कनाक्ष्यासमाचनत्॥माधनं वायं यावच्छ हनं शुद्धात्मयूजनं
।विभुद्वयुर्वकालेषु खवनंयुर्वकालेषु नदवना॥नृकवर्णं महानर्कं मिखा (मखन
नृयिनं।वायव्यां मलियूवनं ऊलवर्गं विष्टुदवर्गं॥॥ममवर्णं महानर्कं न

ननयूजनं। आवाक्यानिमूलाश्च उच्यन्ते। आदि कात्रय ७॥ द्वाविंशच्चवर्तिदशा
चलुं। अक्षदिवसा। दायंय कालयन्मन्त्रा स्वस्ति कुर्यात्समन्तुके ॥ गतादीया
चनं कृत्वा ध्यानसायादि कात्रय ७। श्रीसंवर्तमिमन्तुल गतादीयश्च गामय
७॥ नूनस्तु उच्यमन्तुल कालदीयश्च रक्षय ७। महासमयमन्तुल स्वचनं
रक्षयान्मूख ॥ निर्माल्यं निर्मलं दहं मन्तुर्हवन् रक्षणी। मत्स्या मांसमिम
न्तुल उल्लवन् रक्षयद्दध ॥ श्रीशुक्लविज्ञानमन्तुल (अथर्वयागयत्सूधी ४।

सर्वचनं नमस्कानं चनं सर्वश्च गामय ७॥ नूनन विधिनामन्तुश्च नून सर्वश्च
यागय ७। गग ४ यागं समूह्य यागान्यादी यथाकथं ७। यथमन्तुल उद
शा। यासां किंश्च गामय ७। द्विमाय नूद्वयाकश्च य (०) सन्तानसूचकं ॥ गता
यस्वदुदं दशा। संवर्तसूचकं य (०) ७। यामिथ नमिमन्तुल सर्वषामामिषं दद
७॥ उच्यनिदया मन्तुल समयानं च कात्रय ७। वक्रालुयूवर्णं गृह्य सर्वेरेव
(अथर्व ॥ यागमहि ४ ययूया थ सर्वषामहि (अथर्व ॥ सिद्धवचनं ननवमा

हनीयस्य संयुतं ॥ आगिन्यादिहेतुवशात् न मिलकं कावय दूध ॥ न कानकमि
मनुज दद्यामीर्वा दमाल ॥ नृमयूर्ध्वगर्भमनु प्रात्माभीर्वा दब्ध विन ॥
विसर्जनं वलीनां नृणां तस्मात्सीनं नृकावय ॥ मूढा लायं न त ॥ दत्त्वा वीनं
ऊं व कावय ॥ स्थायिना मृतक म्हादं आगिनाय ॥ समर्थय ॥ समर्थानं व
सर्वथा यूनर्द्धत्वा वनर्थय ॥ कलङ्कयूजनं यश्च स्नानं च विसर्जय ॥ कल
कूनादिष्वर्कं च आगिष्वदाय यत्न ॥ शुभ्रं शुभ्रं यत्नी नमस्कानं समाव

न ॥ नूननेव विधानं न यश्च कुर्यान्निमिशागर्कं ॥ पापकं वृकमस्तु नृ स्यामिष
प्रमाणं ॥ ॥ नृमिषा वलुक्षीया वना नृभीकलनाथ विप्रविन नृद्वयादि दायया
नृवृत्तं सूर्यं समर्थं ॥ ॥ ॥ लवनादु कयिष्वा क यलार्तु मांसयश्च कं
लसूनं नृमहाद वि मांस युमि निधि स्मृ न ॥ यत्न न नर्थ लया येन व ॥ ॥
(गानन व लब्ध मदिष्व वना लुक्तं म्हाद्वं ॥ महा मांसाश्च कं या कं दवनाया
मिकावर्कं ॥ यथा नाम लस ॥

१३ नमः श्रीकृष्णाय ॥ ननु यविशात्राह न विधिर्निश्चयः ॥ आखाटस्य वरु
द्वयं मिथूनस्तु दिवाकन । यस्तु मिनि विरुयं यविशात्राह नयनं ॥ ॥ क
सालिकामाय ॥ आखाटस्तु वरुयद्वयं मिथूनस्तु दिवाकन । अष्टम्यां च वरुद्वयं
करुयं सूयविश्वं ॥ नदसाहयिकरुयं कर्कटस्तु दिवाकन । अविनाधनकरु
यं यावच्चतुलपूरुमा ॥ ॥ नून्यगामि उरुमाषादिर्नयार्कं मध्वमारुमश्र
वला । नून्यमारुमहादयः नाम विरुमिनाधिन ॥ कारुिकयर्चदवार्ना मिव

प्रायश्चित्तानि ॥ ॥ सप्तसप्तनवमायूजास्तुलं याया नि साधकः ॥ यविशात्राह ले
कन निश्चयं नदवानन ॥ यन स्या यविशार्थं नावनाह नि ययन ॥ नयार्कं द्वा
दशवर्षाणां यूजास्तुलं विनश्चमि । कायनमनसा वापि वचननधननवा ॥
करुयं दवदवर्षां यविशात्राह नयि य । विनश्चमि महाभाग दू१ स्वभा
कायनकम ॥ यूजाग्रं कयग्रं दिवाचकस्य वाक्क । शुभदादिमिथु
धर्मगुणहत्यादिकं नुय ॥ यविशात्राह लद वि विनश्च न्याशु यागकान्

विदुष्यरुलंदवि वदुगार्थरुलं सह ॥ दानधर्मास्तु दवमि कलानार्ह
 निष्ठा ॥ यविर्गयनमंयूषं सर्वविषविमर्दकं ॥ ननकार्यमिदं दविकृत
 उस्तु यविर्गकं । लंघनं समया नानु गार्थं सर्वं विनश्चरि ॥ वर्षवर्षय कर्तव्यं
 यथ विहं विस्तृता ॥ ॥ अथ यविर्गकनार्थं सूर्यं यथा ॥ दूतसूतलु सुग
 लिङ्गनायानुत्तं नथा । द्वायनना मुसूगानि कलोकया समवच ॥ यथ
 कृणुतमादाय शुक्तिमान् रुलां गुलि । कृद्मना कथन्ति नु कृता धूये ४

व ३

संधूयिर्ग ॥ यविर्गकात्रयद वि संस्क्रान्तय विर्गकं ॥ ॥ अथ सूर्यकनर्ग ॥ च
 पुर्थदिवसवाक्कली दूतसूर्यं वा द्वाकिगा मुहि १ कनसूर्यं वा कृमावी दूत
 सूर्यं वेकसूर्यमादाययुकात्रर्ग ॥ नें ऊक १ अमुय रूट् ॥ नननसूर्यवन्दं क
 र्ग ॥ ॥ मिखामनुदाय विगयाटनं ॥ मित्रमनुदायुक्ति कनर्ग ॥ कवचननक
 वन्दनादिलयनं ॥ ॥ वरुसमं ॥ कर्णनं कृद्मं वेव वासमांसीं पुत्रन्दनं ।
 उगत्य क्रसमायकं यविर्गलयनगुहं ॥ ॥ अथ पूर्व सिद्धि वसदवस्तानं

यश्च मृगादिहि ॥ ३ ॥ द्वात्रिंशत्कृत्वा ॥ सन्धादिनित्यकर्मकृत्वा ॥ नेमिक्रिकमा
 वन ॥ विधिनाकर्मवनकुमलदव्यञ्जनं ॥ मासिनीं यरि स्वां ॥ अधनान्तं नि
 र्वत्त ॥ शिदवादि कुमलसमग्रदवर्गायूक्त ॥ वसिष्ठूजादो यथा कर्मकात्र
 य ॥ द्वात्रिंशद्दिक्कान्तस्त्रिक्रिकमालिख्य गण ॥ यारिकां निधाय गदयसि य
 विषं गृहीत्वा यजमाननस्त्रियन ॥ मङ्गलानिर्मन्त्रनं ॥ नैऋत ॥ अमुकयदु
 ॥ ३ ॥ वस्यमि ॥ वसिं ॥ नैऋत सर्वविघ्नकृत्वा ॥ सर्वहनत्वा वसिं गृह्ण ॥ स्वाह

॥ द्वाय ॥ गदह्रिद्विष ॥ गताः ॥ त्रिंशद्दिक्कान्तस्त्रिक्रिकमालिख्य गण ॥ यारिकां निधाय गदयसि य
 विषं गृहीत्वा यजमाननस्त्रियन ॥ मङ्गलानिर्मन्त्रनं ॥ नैऋत ॥ अमुकयदु
 ॥ ३ ॥ वस्यमि ॥ वसिं ॥ नैऋत सर्वविघ्नकृत्वा ॥ सर्वहनत्वा वसिं गृह्ण ॥ स्वाह

उद्धवकुलपूजनं ॥ विनतं ॥ नृं ऊं श्रीं विनतं वा धि का न य या ये या दू कां ॥
नृं ऊं या न ऊं ऊं य न म या न ऊं या न मूखा ला म ला य ला व म र द म र यिव र
नृं र न नृं ऊं ऊं ऊं रूट वि शान ला ये नृ य या ये या दू कां ॥ नृं ऊं ऊं ऊं रूट
आत्म न त्व य या ये य या ये या ये या दू कां ॥ नृं ऊं ऊं आन न्द म कि रे व वा न
नृ वा ना धि य न य म् ॥ श्री म हा वा ऊं म् वा या ॥ दू कां ॥ नृ या न व ऊ व
मी मि ॥ म य शी ॥ ॥ नृं ऊं ऊं वि का ये वि द्म ॥ रू कूल दी या ये धी म

हि न न १ वृ डि १ य वा द या ७ ॥ वि धाय ऊ ॥ ॥ श्रीं श्रीं ॥ नृं ऊं ऊं य वि
वृ क ना था य या दू कां ॥ ३ ॥ नृ वा रु ना दि वि मि खा या नि म् दा ॥ ॥ वि
नृ य यं ॥ ॥ ऊं का न य थ म न नृ दि ना यं सा म द व ना ॥ नृ ना यं ॥ व
दि दे व त्वं व रु थं वृ क द व ना ॥ यं म ना ग द व त्वं व रु वे न मि वि ध
ऊं ॥ स य म सूर्य द व त्वं म रु मं व म दा मि वं ॥ नृ व मं स र्व द व त्वं न नृ
नां व वि (म य न श य वि वृ क ना था न वि (म स र्व य वि य लु म मु ॥ ॥

नवतनुनालकननुयविशुसूयसंख्यकंकात्रये॥ ॥कंकिनियविशुक
मार्गंठहीत्वा सर्वं गन्धयविशुकं सलज्जनं कल (अय निस्काये) ॥ ॥ जं
नृयवाला रुकल्य ॥ ॐ नृयादि ॥ कंकिनिना ॥ नृमनुनकार्य ॥ ॐ नृकेलाभ
यी ० मध्वरुं कायलानु विग्रहं । वरु १ यी ० समायूकं यागिना सिद्धि स
युनं ॥ नृमनुनाकयानि कोली मं सरुहं नव । नृकनुदवदवभी नृक्री
याहं यविशुकं ॥ वरु कदु स मायूकं मूय कदु समन्विनं । नवषाउ मसि

द्वा १ युवा १ नृमनुनं ॥ नृमनुनामयारुक्ता गन्धयूकं यविशुकं । वि
यायारिसमसुहि गथावेशवनी गलान ॥ समसुदलदवमि वूलसव्यवस
मन्विनं । नृमनुनामया सर्वं यविशुद भेना गवाट् ॥ यजमानस्य मि ॥ नृधि
वासनयविशुकनयादूकां ॥ नवंकलाखलमनुल जलयागार्थयाय य १
वलि पिवलि पिदव पिशु द्वि युन मलुल नृम कलम वरु युनूयकि
उषधा धाकल मारुका रुगवनि वागी ध्वनी कुम विखलु मूल युलु

श्वरी. नि. (ग) श्वरी. शुक्र काली. सिद्धि सङ्गी. शिव प्रसूदनी. यथायासाद शुभ. य
श्रीमी. रुनरेत्रव. दसा ला. सगुल. द्वायादिसर्वथा दद्यात् ॥ स्वस्वदवस्य मनुष्य
उद्गमावाक् ॥ स्वस्वमूला ॥ ॥ वलियुदानं ॥ धूप. दाया दिऊयसा शानं कृत्वा नर्या
ली ॥ वक्रल यूजा दक्षिण ॥ या गिनीय रुमिथ श्रीमनुष्य ददत्युषा कर्म ॥ यथा म
किं लक्ष्मी ॥ नृमिन्न प्रियासन विधिः समा. यः ॥
॥ उं नमः ॥ श्री कृष्ण कारये ॥ नृथ यत्र यः ॥ यान सानादि निर्यकर्म कृत्वा ॥ यत्र मा

नन द्वाया ॥ श्री सूर्यार्थ ॥ उं नृथ ला. दे ॥ यत्र मानस्य लादिय विज्ञात्रा रुन यूजा
निमित्तार्थ श्री सूर्यार्थार्थ नमः ॥ उं मा रुन्ध कात्र ॥ यथा रुन नृथ (म) ॥ उं नम
॥ श्री कृष्ण कारये ॥ श्रीमात्रका ॥ सिद्धि नमु ॥ ॥ श्रीमनुष्य वाक् ॥ उं श्रीमनुष्य सि
या गिन्या सगर्ल गुन पूर्वकं. यथा दूर्वा कर्म चेत. सोमनस्य यय कर्म ॥ सर्वथा
यश्च ऊन लावा सय ऊन या गिन्या दिथा दत्वा श्रीमनुष्य ना कर्म दत्तौ समर्थ यत्र
यथा ला सान्म रुषनं ॥ ॥ नना विज्ञायी वि रुन्ध श्री दवी यूऊन मात्र रु ॥ यश्च

[illegible]

वदूकनाथयगन्ययविशुकनयादूकां॥ नूंऊं दूं दूं दूं दूं १ दूगयालाययादूकां॥
 नूंऊं योंयागिनीययादूकां॥ नूंऊं दूं दूं दूं दूं १ दूगयालाययादूकां॥ नूंऊं योंयागिनीययादूकां॥
 १ (हों) दूलगलाययादूकां॥ नूंऊं दूं दूं दूं दूं १ दूगयालाययादूकां॥ नूंऊं योंयागिनीययादूकां॥
 दूगयालाययादूकां॥ नूंऊं दूं दूं दूं दूं १ दूगयालाययादूकां॥ नूंऊं योंयागिनीययादूकां॥
 ॥ दूगया॥ नूंऊं दूं दूं दूं दूं १ दूगयालाययादूकां॥ नूंऊं योंयागिनीययादूकां॥
 विशुकनयादूकां॥ नूंऊं दूं दूं दूं दूं १ दूगयालाययादूकां॥ नूंऊं योंयागिनीययादूकां॥

[illegible]

प्रमान ॥ मनु ॥ नैऋतं सिद्धये यादूकां ॥ नैऋतं मृगद्वये यादूकां ॥ नैऋतं मि
त्रिणाये यादूकां ॥ नैऋतं मूलश्रेयादूकां ॥ नैऋतं दायाये यादूकां ॥
नैऋतं मासिनो यादूकां ॥ नैऋतं मित्राये यादूकां ॥ नैऋतं वसुमूखाये
यादूकां ॥ नैऋतं नाभवमाये यादूकां ॥ नैऋतं वदूकाये यादूकां ॥ नैऋतं
हृदिकभाये यादूकां ॥ नैऋतं १ मरुमूखाये यादूकां ॥ नैऋतं दक्षिण
नैऋतं हृदयाय नमः १ यादूकां ॥ नैऋतं मित्रसखायादूकां ॥ नैऋतं मि

त्राये वषट् यादूकां ॥ नैऋतं वक्त्राय दू यादूकां ॥ नैऋतं नयनाय वीषट्
यादूकां ॥ नैऋतं भ्रूमाय हृट् यादूकां ॥ नैऋतं मिषट् ॥ ॥ नैऋतं ललाटे ॥
यत्प्रमानस्य नि ॥ श्रीगुरुमनुसुनवात्मा हृदयकायसर्वार्थविशुक्कनयादू
कां ॥ ॥ मखला ॥ १०८ यत्किं समदूथलमान ॥ मनु ॥ नैऋतं नैऋतं मरुयूजा
गुरुमनुसुनश्रीवृद्धिकाये यादूकां ॥ नैऋतं मरुयूजागुरुमनुसुनश्रीमका
ये यादूकां ॥ नैऋतं यत्प्रमखीगुरुमनुसुनश्रीदयाये यादूकां ॥ नैऋतं यत्प्रम

[illegible]

बांहुदयादि॥ वलि॥ आवाहनादि॥ आनिमूदा॥ ॥ आहान्यासकं किनि ॥
 जंजुं मूं सर्व आहान्यासहृदात्रकलागन्धयविशुक्कनयादूकां॥ यूर्य
 यादू मूं मूं कां॥ वलि॥ ॥ शुभयकि॥ गुं ११ यन्कि जवं किज॥ जंजुं मूं
 गुनू यूर्य यकि हृदात्रकायगन्धयविशुक्कनयादूकां॥ बांहुदयादि मूं
 ॥ वलि॥ आवाहनादि॥ धनमूदा॥ ॥ आषधी॥ गुं ११ यन्कि सम॥ दूं
 थलमान॥ जंजुं मूं आषधीकुमहृदात्रिकायगन्धयविशुक्कनयादूकां

॥ सांहुदयादि॥ वलि॥ आवाहनादि॥ महामूदा॥ ॥ श्रीकल॥ गुं ११
 यन्कि जवं कि जदं थलमान॥ जंजुं मूं मूं श्री श्रीकल नाथ स्व शा कि
 सहिगायगन्धयविशुक्कनयादूकां मूं मूं ॥ बांहुदयादि॥ वलि॥
 आवाहनादि॥ शिगूलया निमूदा॥ ॥ मातृका॥ गुं ११ यन्कि
 सम॥ यूर॥ जंजुं नूद्यान नूमाद्यवन्नदं नू श्रीवक्त्राणी विज्ञं गन्धयविशुक्क
 नयादूकां॥ धर्थ॥ मारुज्वरीय ह निन॥ सांहुदयादि॥ वलि॥ आवाहनादि

॥ यद्वा विष्णुं भक्तिं संख कालं च मरु खड्गमूदा ॥ ॥ एवमिति ॥
 पुंश्च युक्तिसम ॥ दूथलमान ॥ नृजं उं कां नाऊयद कुं उग्रच लु नियूमर्द
 निद्रूं रुं सदानक २ र्वी मां ईस ४ मृत्यु रुवननम ४ स्वा हा ॥ आउग्रच लु अर्थ
 गन्धय विष्णुकनया दूकां ॥ षष्ठं ॥ वलि ॥ आवा रुनादि ॥ आनिमूदा ॥ ॥
 वागीश्वरी ॥ पुंश्च युक्तिसम ॥ दूथलमान ॥ नृजं विंकिटी पिंकिटी दूटदू
 लु वागीश्वरी वद्धमरु नाविका विच्च गन्धय विष्णुकनया दूकां ॥ विंकिटी रु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दूधसमानं ॥ वृं ऊं ङूं कूं नाऊ यदं क्रूं उग्रचक्षुः नियमदं
निद्रं हंसदा नंद २ स्त्री मां ईं स ४ मृत्पुरुष नमः ४ स्वाहा ॥ श्रीउग्रचक्षुः

मन्त्रयश्चिक्कनयादुर्का ॥ षष्ठः ॥ वलि ॥ आवाहनादि ॥ आनिमूया ॥ ॥

वाणीध्वनी ॥ सु २ न ग न्नि सम ॥ दू थ स मान ॥ जं ऊ विं कि टा यिं कि टा दू ट दू

लुवाणीश्वरीवृद्धमरुकाविकाविञ्चयन्त्रयविश्वकनयादूकां॥ विंकिटीह

दयादि॥ वसि॥ आवाहनादि॥ आनिमूढा॥ ॥ अथकुम॥ शिवरत्न॥ मनु

३३० यत्किं ४ वं किं ४ ॥ मन्त्र ॥ अक्षयं वक्र वनीमि वक्र व्यासने ॥ ॐ कैल

श्री ॥ यत्तु मानस्य नि ॥ श्री कृष्णं हृदय काय भिवन त्वं गन्धय विशु कनया द

कां॥ ॥ विद्यानृत्त॥ ॐ १०८ अन्ति ३३ दूथलमान॥ मन्तु॥ जंऊनमालगत

निष्कृदिकार्ये म्मुं मुं दश्चनमद्यावन्नद्यानाम् शिक्कां च निःश्वि

व्यां दू काँ ॥ वृं ऊ र ग व रि सिद्ध ह्रूं ह्रीं कू किक्क म्युं मुं शुं ख (सर्वज्ञान)

[illegible][illegible]

समसूखविलस
ययुदमकिनावर्द्धस्व

वर्णववावःयूनागु ॥ ॥ कलकलि
कृत्रुलनिमिवनालाव्यालयश्लायवीनि।क
कदलनरुजयनिवदूकनाथःसिद्धिदसाध
गङ्गकुमानागगउगउगउदालयन्याकूदंश्यामा
ऊनऊनऊनकाल्यमानःसटारिःदंखा(ये)ःखाशमान
के०फ०कटलूयमानःसूत्रयेविकान्तायस्यरुनिर्जगहगहग

यागुन १४ नृसिंह १॥ ॥ गुष्ठात्रिनिवाहिका विजुवनेक निस्काविका
ये कामनिकलास सहालिका। कदम्बवनमाहिका सलिननी
ऊनयाहिका ऊनकाहिका यागुमां ॥ ॥ यद्वाचीन
काठीनकाटि शिखरस्य दनालामलमलिम
दाभाऊयुग्मनस्वमुख विलसदभिर्किंऊ
विनमलिमं मङ्गलं वाहवाया ॥ ॥ म

वयुसंस्कंदवागीकृदिकामनसमृदि
त्रवमदिनिऊलदहनवायनाकामनूर्यसा
नकनयागुव १॥ गोवमकि ॥ ॥ शुद्धेकास्यस्ववर्ण
नवानन्दनूर्यं दददिलुमरुसंयवभुमसिगनं नृक
ऊमस्व। वामस्वद्वामूलं रुलकधनूधनं यागयलृक यार्ग दोरुसी
दिवाशं वन मूरयधनं यागुमां कृदिनाथ ॥ ॥ नयनामो नृणा हाऊवक

ममनिहातिमावृद्धिदत्तावकेकंशालिनशिवनमूरयधवाहेनवानदम
शसंस्तिस्वाद्यवर्जयत्तवृत्तवृत्तगर्भंनृचिर्नमृत्तवाङ् नोमिथीवृद्धि
नीयाशुल्लुक्कायदानी ॥ ॥ धकिनीदूक्तयावाक् ॥ ॐ नृ
दि ॥ विशाया ० मरुद्धानवाक्कमरुत्त (अ) हिर्न। य
हर्व ॥ नर्कदुर्धनयाविर्णयुनिभालामरु
समाहिर्न ॥ नरुत्तनगुयाशुक्काययय

पूनामिथिकायमं ॥ सर्वयायविनिर्भूक्तं स
पूनादिथोवलक्कीसमरुत्त ॥ गयुर्लुवमुर्न
गावद्वर्धसहस्रागिवसद्वालयसदा ॥ यनिभा
यमनिकाथिंकधकिनी ॥ नितकलुवायाधकिनी ॥
अत्रालङ्कारोदयसत्रसिऊगालमृत्तललाटद्वयशशाठभनद्विद
नदमदलद्वादमद्वदगुक्कावासानकवालम (अ) उरुक् ० सहिनकलुद (अ)

स्वनादानं हृदोकादनुमच्छन्त्यसुविमलधाम्नाससंयति सिद्धौ ॥ ॥ महा
नाम्नायैकमयिमलियूतकृतवदः स्मिन्निस्त्राप्रिक्खनरुदिमवूनमाका
विमनायिगुमच्छसकसमयि डिक्खकूलयथं सरुप्रावययस
विमनायिगुमच्छसकसमयि डिक्खकूलयथं सरुप्रावययस
विमनायिगुमच्छसकसमयि डिक्खकूलयथं सरुप्रावययस ॥ ॥



